Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ और भारत : अर्थव्यवस्था पर पड़ता प्रभाव

डॉ. भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा	सह-आचार्य (ईएएफएम), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान.
डॉ. कुशाग्र सिंह नेगी	सहायक आचार्य (ईएएफएम), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान.

ABSTRACT:

यह लेख ग्लोबल साउथ की अवधारणा और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका का विश्लेषण करता है। ग्लोबल साउथ, उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत और आर्थिक असमानताओं को रेखांकित करता है, साथ ही विकासशील देशों की चुनौतियों और उनके महत्त्व को उजागर करता है। कोविड-19 महामारी, वैश्विक आर्थिक मंदी, और भू-राजनीतिक संघर्षों ने ग्लोबल साउथ की प्रासंगिकता को पुनः स्थापित किया है।

भारत, एक तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था और सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में, ग्लोबल साउथ की आवाज बनने के लिए अग्रणी भूमिका निभा रहा है। 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ' पहल, जलवायु परिवर्तन, व्यापार असंतुलन और विकास संबंधी चिंताओं पर भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। भारत ने वैश्विक मंचों पर अपनी स्थिति मजबूत की है, जिसमें गुटनिरपेक्ष आंदोलन, ब्रिक्स, और G77 जैसे समूहों में सक्रिय भागीदारी शामिल है।

इसके अतिरिक्त, भारत ने 'ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट' के माध्यम से चीन के प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास किया है और ग्लोबल साउथ के देशों को व्यापार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, और क्षमता निर्माण में सहयोग दिया है। इस लेख में भारत द्वारा की गई प्रमुख पहलों, जैसे ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस और आरोग्य मैत्री परियोजना, का भी वर्णन किया गया है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, व्यापार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, आर्थिक मंदी,भू-राजनीतिक, उपनिवेशवाद ।

परिचय

ऐतिहासिक संदर्भ में 'ग्लोबल साउथ' शब्द का प्रयोग प्रायः उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत और पूर्व उपनिवेशित देशों एवं विकसित पश्चिमी देशों के बीच आर्थिक असमानताओं को उजागर करने के लिये किया जाता है। यह आर्थिक वृद्धि और विकास में इन देशों के सामने आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करता है।

भारत के भू-राजनीतिक गणित में यह नेतृत्व करने का समय है। सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा, तेजी से बढ़ती और उभरती अर्थव्यवस्था, अत्यधिक कुशल कार्यबल, एक विकास भागीदार के रूप में उत्कृष्ट ट्रैक रिकॉर्ड है, जिसमें विकास सहायता गैर-निर्देशात्मक और सौम्य है। इसके अलावा कई अन्य फैक्टर भी भारत को वंचित वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने के मामले में दूसरों पर बढ़त दिलाते हैं।

वर्ष 1964 में 77 देशों का समूह (G-77) अस्तित्व में आया, इसमें अब एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, कैरेबियन और ओशिनिया के 134 देश शामिल हैं। इन्हें 'तीसरी दुनिया' के देश कहा गया, इन देशों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं में सुधार एवं विस्तार के लिए अपनी नई भूमिका की तलाश थी। कोविड-19 महामारी, आर्थिक मंदी, रूस-यूक्रेन संघर्ष आदि कारकों का वैश्विक आर्थिक स्थितियों पर प्रभाव पड़ा। इसका विकासशील दुनिया पर तीव्र प्रभाव देखा गया, जिसने वैश्विक मामलों की परस्पर संबद्धता एवं अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में ग्लोबल साउथ के महत्त्व पर और अधिक ध्यान आकृष्ट किया। इन्हीं कारणों से हाल के दिनों में ग्लोबल साउथ ने अपना महत्त्व और प्रासंगिकता फिर से हासिल कर ली है, जो उभरती वैश्विक व्यवस्था को आयाम देने में क्षेत्र के महत्त्व की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है। अब इंडोनेशिया, भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देश निरंतर G20 शिखर सम्मेलन की मेज़बानी कर रहे हैं, वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में ग्लोबल साउथ के मजबूत नेतृत्व तथा प्रभाव को इंगित करता है। ये देश विश्व की आबादी और अर्थव्यवस्थाओं के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। "वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ" शिखर सम्मेलन ग्लोबल साउथ के देशों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ समावेशिता और परामर्श के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है। यह पश्चिमी देशों के प्रभुत्व वाली पारंपरिक शक्ति संरचनाओं से दूर जाने का संकेत देता है।

भारत के भू-राजनीतिक गणित में यह नेतृत्व करने का समय है। सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा, तेजी से बढ़ती और उभरती अर्थव्यवस्था, अत्यधिक कुशल कार्यबल, एक विकासशील भागीदार के रूप में उत्कृष्ट ट्रैक रिकॉर्ड है। इसके अलावा कई अन्य फैक्टर भी भारत को वंचित वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने के मामले में दूसरों पर बढ़त दिलाते हैं। यह पहल ग्लोबल एजेंडे को आकार देने में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभरने की भारत की व्यापक महत्त्वाकांक्षाओं में भी फिट बैठती है।

व्यापक रूप से माना जाता है कि चीन के मॉडल का मुकाबला करने के लिए 'ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट" को तैयार किया गया है, जो आमतौर पर उन देशों के लिए, जो ऋण जाल में फंस जाते हैं, जो BRI के तहत या अन्य बातों के लिए चीन से विकास सहायता प्राप्त करते हैं और जिसके गंभीर परिणाम होते हैं।

भारत ने समझदारी से खुद को ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में पेश करने से परहेज किया है और इसके बजाय अधिक स्वीकार्य वाक्यांश 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ' को चुना है। हालांकि, ग्लोबल साउथ में सामंजस्य और एकता की कमी एक बड़ी चुनौती है, जिससे भारत भविष्य में निपटने के लिए तैयार हो रहा है।

ग्लोबल साउथ के लिए भारत की पहल नई दिल्ली घोषणा है जिसके तहत वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने तथा अधिक समृद्ध, शांतिपूर्ण और सतत् विश्व के लिए प्रयास करने में G20 सदस्य देशों के सहयोगात्मक प्रयासों का प्रमाण है। भारत ने वर्ष 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसका उद्देश्य ग्लोबल साउथ के अधिकारों की वकालत करना है। इसके साथ भारत ने अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया के देशों के साथ विभिन्न द्विपक्षीय समझौते एवं साझेदारियाँ की हैं। ये समझौते व्यापार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण पर केंद्रित हैं। भारत ब्रिक्स का सदस्य है, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं का एक समूह है, जो अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था की सिफारिश करता है।

ग्रुप ऑफ 77 (G77) के संघ के सदस्य के रूप में भारत ग्लोबल साउथ के सामने आने वाली आर्थिक और विकासात्मक चुनौतियों का समाधान करने के लिए कार्य कर रहा है। भारत ने जलवायु परिवर्तन वार्ता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा 'साझा किंतु विभेदित

जिम्मेदारियों' के सिद्धांत की वकालत की है। भारत WTO में दोहा विकास एजेंडा का प्रमुख समर्थक रहा है, जो व्यापार असंतुलन और विकास संबंधी चिंताओं को दूर करने पर जोर देता है। इसके साथ भारत लगातार संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक रहा है, जो वैश्विक शांति और सुरक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

भारत द्वारा आयोजित 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' में निम्नलिखित पाँच पहलों की घोषणा की गई है-

1. ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस

2. ग्लोबल साउथ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव

3. आरोग्य मैत्री परियोजना

4. ग्लोबल साउथ यंग डिप्लोमैट्स फोरम: 5.बौद्धिक संपदा, आनुवंशिक संसाधन और संबद्ध पारंपरिक ज्ञान पर विश्व बौद्धिक संपदा संगठन

भारत के इन प्रयासों से जहां भारत को कूटनीतिक सफलता दक्षिण विश्व में मिल रही है, वहीं उसको एक बड़ा बाजार भी उपलब्ध हो रहा है। जहां चीन के दबदबे को खत्म कर भारत ग्लोबल साउथ के देशों को चीन के कर्ज से जाल से बचा रहा है वहीं भारत उसका विकल्प बन रहा है। इसके साथ भारत के इन देशों के साथ व्यापारिक संबंध भी मजबूत हो रहे हैं। इसलिए भारत अमेरिका और चीन दोनों से समानांतर अपने संबंध कायम रखने में कामयाब हुआ है।

निष्कर्ष

भारत अब ग्लोबल साउथ का खिलाड़ी बन रहा है और इस महत्त्वाकांक्षा को प्रभावी नीति में बदल रहा है। वह चीन को भी मात दे रहा है। ग्लोबल साउथ के देशों से उसके प्राचीन संबंध रहे हैं। वर्तमान में भी उसके संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं। सामरिक कूटनीतिक संबंध भारत के बहुत मजबूत होते जा रहे हैं। ग्लोबल साउथ के देश भारत से व्यापारिक संबंधों से भी जुड़ते जा रहे हैं। यदि भारत के संबंध इसी प्रकार आगे बढ़ते रहते हैं तो निश्चित ही आर्थिक रूप से भारत को लाभ होने वाला है और अर्थव्यवस्था को नया मुकाम मिलने वाला है। ग्लोबल सॉफ्टवेयर शोरूम में भारत की भागीदारी से आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति सहज ही की जा सकती है।

REFERENCES

1. Behera, B., Timsina, J., Aryal, J. P., Datta, P., & Reddy, V. R. ग्लोबल साउथ में खाद्य और पोषण सुरक्षा: नीतियां, तकनीक़ और संस्थाएं.

2. Reddy, V. R., Behera, B., Datta, P., Timsina, J., Rahut, D. B., & Aryal, J. P. ग्लोबल साउथ में खाद्य और पोषण सुरक्षा: नीतियां, तकनीक़ और संस्थाएं.

3. Powar, P. A. (2024). INDIA'S IMPACT ON BRICS: ECONOMIC GROWTH AND POLITICAL DYNAMICS. *HUNDRED YEARS OF INDIA*, 95.

4. Maharaj, B. (2015). The turn of the south? Social and economic impacts of mega-events in India, Brazil and South Africa. *Local economy*, *30*(8), 983-999.

5. Hofmeyr, I., & Williams, M. (2011). *South Africa and India: shaping the global south*. NYU Press.